वहाबी मत का सत्य

लेखक :— आयतुल्लाहिल उज़मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी

किस्त : 4 सम्पादन : नूरे हिदायत फाउन्डेशन

और सिहाह (हदीस के छः संकलन जो अहले सुन्नत में 'सहीह'/प्रमाणित माने जाते है) की हदीसों से साबित है कि जिसने रसूल[स0] को सपने में देखा उसने हज़रत[स] ही को देखा क्योंकि शैतान हज़रत[स] की सूरत में नहीं आ सकता। इससे यात्रा करना रसूल[स] की कब्र की ज़यारत के लिए खुद रसूल[स] का आदेश साबित हो जाता है जिससे इन्कार नहीं किया जा सकता है।

इब्ने अब्दुल वहाब ने इस बात को भी अपने पहले वाले इब्ने तैयमिया व इब्ने क़य्यिम से लिया है कि इन दोनों ने सबसे पहले यह आवाज़ उठाई और इसे साबित करने में बड़ी लम्बी बात (खींचा तानी) से काम लिया और इस्लाम के उलमा ने उसकी काट में पूरी–पूरी किताबें लिखीं जैसे "षफ़ाउस सिक़ाम फ़ी ज़ियारति खयरिल अनाम" जो आठवीं सदी हि0 क़ाज़ियुल क़ुज़ात हाफ़िज़ तकीउद्दीन हसन सबकी की लिखी है और अल्लामा इब्ने हजर मक्की की "जौहरु मुनज़्ज़म फ़ी ज़ियारति क़ब्रि नबी इल मुकर्रम", मुफ़्ती सदरूद्दीन ने "मुनतहियुल मक़ाल ''फी शर्हि हदीसे ला शहिदल रिहाल'' तथा सैय्यद मुस्तफा नूरुद्दीन अलहुसैनी की ''खुलासतुल मिक़ाल फी शद्दिल रिहाल'' आदि।

यहाँ कुछ उन किताबों की पक्तियाँ और कुछ दूसरे उलमा के कथन जो दूसरी किताबों में इस विषय पर हैं लिखे जाते हैं।

अल्लामा सबकी ने अपनी किताब की पूर्व प्रस्तावना में लिखा है कि "अल्लाह से करीब (निकट) होने वाले कार्यो में सबसे अच्छा कार्य हज़रत सरवरे काएनात[स] (सृष्टि प्रमुख) की क़ब्र की ज़ियारत है और दुनिया के कोने कोने से उसके लिए यात्रा है जैसे कि समस्त मुसलमानों में सालों साल (शताब्दियों) से होता चला आता है और उन बातों में जो शैतान ने इस समय के कुछ अभागों की ज़बान से निकाली है इसमें शक को जन्म देना है। और यह आशंका उनके दिल में कदापि नहीं आ सकती जो सच्चे मुसलमान हैं और यह एक वस्वसा (भ्रम) है एक ऐसे अभागे का पैदा किया हुआ जिसका पाप उस पर आएगा और उस पर वही आदेष लागू होंगे जो अल्लाह ने साफ तौर पर ऐसे ही व्यक्ति के लिए लागू किए हैं और गलत आशंकाएं समाप्त होकर रहती हैं। दूसरी जगह इसी किताब में लिखते हैं

"इब्ने तैयमिया के पास इसका कोई तर्क नहीं और दीनी कानून और अस्लाफ़े सालेहीन (अच्छे नेक पहले के व्यक्तियों) के जीवन से पता चलता है कि वह बहुत से अच्छे कर्म करने वाले लोगों की क़ब्रों को बरकत वाला समझते रहे हैं जबकि कहाँ नबियों और रसूलों की क़ब्रें, जो यह दावा करें कि नबियों और मुसलमानों की क़ब्रें बराबर हैं उसने बहुत बड़ी ग़लती की और ग़लत दावा किया जिसके गलत होने का हमें निश्चय है और इसमें रसूल[स0] के मरतबे ख़्याल को साधारण मुसलमानों की सतह तक घटाना है और यह बिना किसी शक के कुफ्र है। इसलिए कि जो रसूल[स] के मरतबे (कोटि) को उनके स्थान से गिराए वह काफ़िर है और अगर वह कहे कि यह गिराना नहीं है बल्कि उनके ठीक स्थान से उनकी महानता को बढ़ाने से रोकना है तो यह भी अज्ञानता और गुस्ताख़ी है। और हमें निश्चित विष्वास है कि पैग़म्बर[स] इससे भी कहीं अधिक आदर के पात्र हैं जीवन में भी और अपनी मृत्यु के बाद भी और इसमें शक नहीं कर सकता वह जिसके दिल में थोड़ा भी ईमान हो।"

अल्लामा इब्ने हजर जौहरे मुनज़्जम में लिखते हैं: "अगर तुम कहो कि हम पाक क़ब्र की ज़ियारत और उसके लिए यात्रा के धर्म शास्त्र के सही होने पर इजमा (एक राय) कैसे मान सकते हैं जबकि हम्बली गिरोह में से इब्ने तैयमिया इन सब बातों धर्मोचित होने के ख़िलाफ़ है जैसा कि सबकी ने लिखा और कहा है कि इब्ने तैयमिया ने इस पर बहुत लम्बा तर्क दिया है बल्कि उन्होंने यह दावा किया है कि इस ज़ियारत के लिए भाग इजमा से हराम है। और इसमें नमाज़कस्र नहीं होगी और जितनी हदीसें इसके महत्व में हैं सब गलत हैं और बाद में भी कुछ उलमा इस बात पर चले हैं तो मैं कहूँगा कि इब्ने तैयमिया कौन है जिसकी ओर देखा जाए और धर्म के मामले में से किसी में भी उस पर भरोसा किए जाए, और वह तो, जैसा कि एक जत्थे ने जैसे ग़र बिन जमाअ ने उसकी बातों की और बेकार तर्कों की समीक्षा की और उसकी झूठी बातों और गलितयों को उजागर किया है, एक ऐसा व्यक्ति है जिसे अल्लाह ने भटके हुओं में पहुचा दिया है, उसे अपमान और रुसवाई की चादर ओढ़ाई है और बरबाद होने के लायक बनाया है और बहुत अधिक झूठी और ग़लत बातों से उसने अपने लिए वह स्थान बनाया है जो उसके अल्लाह की रहमत से दूर होने का कारण है और शेख़उलइस्लाम तक़ी सबकी ने जिनकी बड़ाई, कठिन परिश्रम, और परहेज़गारी (संयम) मानी हुई है उसकी काट में एक किताब लिखी और उसमें मज़बूत तर्क से सही मार्ग को उजागर किया है।"

मुफ़्ती सदरूद्दीन ने "मुनतहियुल मक़ाल" में लिखा है कि:"बड़े आलिम मुहाद्दिसों (हदीस के विद्वानों) के प्रमाणाधार शेख मुहम्मद बरसी ने अपनी किताब ''इत्तिहाफ़ु अहलिल इरफान बरुयतिल अबियाइ वल मलाइकति वलजान्''में लिखा है कि इब्ने तैयमिया हम्बली ने दुस्साहस से काम लिया और दावा किया है कि हज़रत[स] की क़ब्र पाक की ज़यारत के लिए यात्रा हराम (निबद्व) है और यह कि नमाज़ इस यात्रा में क़स्र न होगी इसलिए कि यह यात्रा पाप है और इसमें उसने बड़ी लम्बी बात से काम लिया जिसके सुनने से कान नकारते हैं और मन (स्वभाव) उबते हैं। इस बात की नहूसत (अशुभ) उसके साथ रही यहाँ तक कि उसका दुस्साहस अल्लाह तक पहुँचा और उसने अल्लाह की मर्यादा के पर्दे को फाड़ा और ऐसी बातों के साबित करने की कोषिष की जो उसकी महानता,मर्यादा और शान के विपरीत हैं कि खुदा के लिए दिषा, और शरीर का दावा किया और जो इसे न माने उसे भटका हुआ और पापी कहा और इसका मिम्बरों पर एलान किया और इसका चर्चा चारों ओर फैला और उलमा मुजतहिद कि जो इससे पहले हुए हैं बहुत से मसलों में उनके ख़िलाफ़ हुआ और ख़ुलफाए राषेदीन पर (चारों खलीफा पर) लच्चर इतराज़ किए जिसका परिणाम यह हुआ कि वह उस समय के सब उलमा की नज़र से गिर गया और आम खास सबने उस पर उंगली उठाई और उलमा ने उसकी गलत बातों की जाँच की उसके तर्क की काट की और उसकी अटकल परिच्चियों और गलितयों को उजागर किया।"

अहमद बिन शहाबुद्दीन ख़िफ़ाजी ने "नसीमुर्रियाज़" में रसूल[स०] की इस हदीस के लिखने के बाद कि "अल्लाह लानत करे यहूदियों और ईसाईयों पर कि उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को सजदा करने का स्थान पूजास्थलों बना दिया" लिखा है:

"पता होना चाहिए कि इस हदीस की वजह से इब्ने तैयमिया और उसके अनुयायियों जैसे इब्ने कय्युम ने अपना वह विश्व कुख्यात विचार खड़ा किया जिसकी वजह से सब ने उन्हें काफ़िर कहा और सबकी ने एक किताब उस पर लिखी और वह रसूल[स०] की कब्र की ज़ियारत और उसके लिए यात्रा को हराम (निशिद्ध) कहता है उन्होंने अपने विचार में तौहीद के पहलू की रखवाली की ऐसी व्यर्थ बातों के साथ जिनका कहना भी ठीक नहीं है क्योंकि वह किसी अक़ल वाले की ज़बान पर भी नहीं आ सकती, न कि किसी विद्वान की जुबान पर।"

जारी ....

कुदवतुल उलमा
मौलाना सय्यद आक़ा हसन साहब क़िब्ला

लेखक : मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी असीफ़ जायसी

पितृ वंश :

कुदवतुल उलमा मौलाना सय्यद आक़ा हसन साहब मुजतहिद पुत्र मौलाना सय्यद कल्बे आबिद पुत्र मौलाना सय्यद कब्ले हुसैन साहब क़िब्ला जायसी पुत्र रईसुल उलमा मौलाना सय्यदवली मोहम्मद हुसैन साहब क़िब्ला जायसी मुजतहिद पुत्र मौलाना सय्यद अली सज्जाद पुत्र मुल्ला सय्यद फसीहुल्लाह पुत्र मुल्ला युसुफ़ अली (बहादुर शाह जफर के उस्ताद) पुत्र मुल्ला सय्यद असमतुल्लाह (सदरूस सुदूर दिल्ली) पुत्र मुल्ला सय्यद लुतफुल्लाह पुत्र मौलवी सय्यद बदीउज़्ज़मां पुत्र मीर फतेहुल्लाह पुत्र सय्यद अरशद पुत्र सय्यद सुलेमान पुत्र सय्यद ज़करिया जायसी (फ़ातेह द्वितीय नसीराबाद) पुत्र सय्यद खिज्र पुत्र सय्यद ताजुद्दीन पुत्र सय्यद नसीरूद्दीन जायसी (फ़ातेह अव्वल पटाकपुर, नसीराबाद) पुत्र सय्यद अलीमुद्दीन पुत्र सय्यद अलमुद्दीन पुत्र सय्यद अशरफुल मुल्क सय्यद शरफुद्दीन पुत्र अशजउल अस्र मुल्ला नवाब नजमुल मुल्क सय्यद नजमुद्दीन सब्ज़वारी फ़ातेह जायस (मद्फून बि अर्ज़े बनारस)।

मातृ वंश :

कुदवतुल उलमा नवास–ए–उम्दतुल उलमा मौलाना मोहम्मद हादी मुजतहिद इब्ने आक़ा सय्यद महदी मुजतहिद पुत्र मुहीउल मिल्लत वद्दीन मुजद्दिदे शरीयत मुजतहिदे आज़मे हिन्द मौलाना सय्यद दिलदार अली नक़वी नसीराबादी गुफ़रानमआब रहमतुल्लाह।

जन्म :

मौलाना सय्यद कल्बे सादिक मुजतहिद का जन्म 6 रबीउल अव्वल 1282 हि0 (1865 ई0) को लखनऊ में हुआ। आप का तारीख़ी (वर्ष–अभिव्यक्ति) नाम 'इफतिख़ार' था। और आप कुदवतुल उलमा सय्यद आक़ा हसन साहब नक़वी 'अक्मल' के नाम से प्रख्यात हुए।

कुदवतुल उलमा के प्रमुख पुर्वज :

बहुत से प्रमुख वंशजों का वर्णन हज़रत गुफ़रानमआब से सम्बन्धित लेख में हो चुका है। जिनका वर्णन नहीं हुआ है उन पर संक्षिप्त दृष्टि डालना वांछित है।

आपके पूर्वजों में मुल्ला सय्यद असमत अल्लामा ज़मान सदरूस सुदूर दिल्ली थे। जिनके ज्येष्ठ पुत्र सय्यद यूसुफ अली हिन्दुस्तान के सम्राट बहादुरशाह ज़फर के गुरू थे। जिसके पुरस्कार स्वरूप जिला राय बरेली में आप को बहुत से देहात मआफ़ी में मिले थे। मुल्ला यूसुफ़ के पुत्र मुल्ला सय्यद फ़सीहुल्लाह भी ज्ञान एंव पुण्य में बेजोड़ थे। उनके पुत्र मौलवी सय्यद अली सज्जाद भी बड़े ज्ञानी व गुणी थे और आप बड़े भागयशाली थे जिन्हें खुदा ने ऐसा पुत्र प्रदान किया जो धर्म के महान प्रचारक रईसुल उलमा व मुजतहिद के रूप में प्रख्यात हुआ अर्थात मौलाना सय्यद वली मोहम्मद हुसैन उर्फ़ मेंडू जायसी साहब (स्वर्गीय) जिन्होंने अपना सारा जीवन इस्लाम के प्रचार और क़ौम की सेवा में व्यतीत किया। उस समय जब यात्रा के साधन सीमित तथा मंद गति वाले थे, धर्म और क़ौम की प्रगति की इच्छा आपमें इतनी प्रबल थी कि यात्राएं आपका भाग्य बन गयीं। और यही धार्मिक प्रचार व क़ौमी सेवा में रूचि आपसे आज तक आपके परिवार में प्रचलित है।

रईसुल उलमा को परवरदिगार से दो तेजस्वी और ज्ञानी पुत्र मिले। बड़े बेटे सय्यद कल्बे हुसैन नक़वी मुजतहिद और छोटे बेटे मौलाना सय्यद महदी रज़ा नक़वी जो सय्यद कल्बे हुसैन साहब के उपनाम से प्रसिद्ध हुए। रईसुल उलमा के दोनों बेटों में ज़्यादा प्रख्यात और गौरवशाली मौलाना सय्यद हसन साहब हुए जो रईसुल उलमा के जानशीन भी थे।

विश्वसनीय व्यक्तियों ने लिखा है कि सय्यद मोहम्मद हुसैन साहब के यहां कोई सन्तान जीवित नहीं रहती थी। हर सन्तान प्रसूति गृह में ही मर जाती थी। जब यह भाग्यशाली (मौलाना सय्यद कल्बे हुसैन) इस दुखमय और क्षण भंगुर संसार में आये तो आशूर (दस मोहर्रम) का दिन था। घर में परिवार के लोग इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की अज़ा (शोक) में व्यस्त थे। पिता गुस्ल के बाद घर से मिले हुए अपने इमामबाड़े (स्थित मोहल्ला कुरदाना कस्बा

जायस जिला रायबरेली) में तशरीफ़ लाये और इमामबाड़े में अज़ा के सामान की छाया में इस दुआ के साथ डाल कर चले गये कि मौला इस अज़ादार को बचा लीजिए। बच्चा जिन्दा रहा तो उसे कल्बे हुसैन के नाम से याद किया। यह वफ़ादारी की अलामत लफज़यानी 'कल्ब' मुहम्मद व आले मोहम्मद सल्ललाहो अलैहः व आलेही वसल्लम के इस वफ़ादार खानदान के लिए गर्व की पूंजी है बल्कि यह शब्द अब इस परिवार में सीमित न रहकर बहुत से कामों की तरह समर्थन तथा अनुसरण के रूप में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में रायज है।

मौलाना सय्यद कल्बे हुसैन के बहुगुणी व्यक्तित्व का क्या कहना जिनकी ज़िन्दगी ही सय्यदुश शोहदा की देन हो वह उनके मिशन के लिए क्या नहीं करेगा। अतः कल्बे हुसैन साहब ने अपनी ज़िन्दगी को खुदा के दीन के प्रचार एंव प्रसार और इमाम हुसैन की अज़ा की तरक़्क़ी के लिए वक़्फ़ कर दिया था।

इस पंजतन के गुलाम को विधाता ने पांच बेटे दिये और पांचों चरित्रवान, धार्मिक गुरू (उलमा) ओर अहलेबैत की शिक्षाओं के प्रचारक थे।

1. मौलाना सय्यद कल्बे आबिद नक़वी जायसी इमामे जुमा व जमाअत रियासते आलिया नानपारा कुदवतुल उलमा के पिता थे।

2. आलमुल अलमा मौलाना सय्यद कल्बे बाक़र नक़वी जायसी मुजतहिद। आपकी सकूनत कर्बला–ए–मुअल्ला में थी और वहीं दफ़न हुए। आप मौलाना सय्यद कल्बे महदी नक़वी साहब मुजतहिदुल अस्र, मौलाना सय्यद अब्दुल मेहदी साहब मुजतहिद के वालिद थे। मौलाना कल्बे बाक़र साहब और मौलाना कब्ले महदी साहब दोनों बाप बेटे इमामे जमाअत रौज़–ए–अबुल फ़ज़लिल अब्बास अलैहिस्सलाम थे और दोनों उस्ताद थे और अरबी भाषा के उच्च कोटि के कवि और साहित्यकार थे।

3. मौलवी सय्यद कल्बे जाफ़र नक़वी जायसी। आप मौलवी सय्यद कल्बे अहमद 'मानी' जायसी, फख़रेकौम खान बहादुर कल्बे अब्बास नक़वी एडवोकेट तथा सय्यद कल्बे मुस्तफ़ा एडवोकेट के पिता थे।

4. मौलाना सय्यद कल्बे रज़ा नक़वी जायसी जो कि अल्लाम–ए–जायसी मौलाना सय्यद अली हसन नक़वी मुजतहिद के दामाद थे।

5. मौलाना सय्यद कल्बे असकरी नक़वी जायसी। आप इमामे जुमा व जमाअत रियासते नानपारा थे और सय्यद कल्बे ज़क़ी साहब के पिता थे।

दादा मौलवी रज़ा मोहम्मद नक़वी 'रज़ा' जायसी के शिष्य हज़रत मानी जायसी ने खानबहादुर फ़ख़रे क़ौम सय्यद कल्बे अब्बास के देहान्त के अवसर पर शोक व्यक्त करने के लिए जो कविता (मुसद्दस) लिखी और जो सरफ़राज़ लखनऊ के कल्बे अब्बास नम्बर में प्रकाशित हुई उसमें जायस के मशहूर लोगों के वर्णन के पश्चात लिखते हैं:

शान मरहूम के घर की भी है अब पेशे निगाह
क्या शरफ़ हकने दिया है उसे अल्लाह अल्लाह।
इस्मतुल्लाह सा इस घर का है मूरिस ज़ीजाह
उलमा उसके सदा दीं के रहे पुश्त पनाह।
आज भी चश्म–ए–ख़ैरो बरकत जारी है
इस घराने पे अभी तक करमे बारी है।
इस घराने को दिये दहेर ने दो कल्बे हुसैन
एक था मोजज़ा–ए–सिब्ते रसूले सक़लैन।
दूसरा ज़ीनते मिम्बर भी था मस्जिद का भी ज़ैन
ज़ाकिरे शामें ग़रीबां दिले ज़हरा का चैन।
फ़ज़्ले ख़ालिक़ से अजब लालो गुहर पाए हैं
लाल पाये हैं कि दो शम्सो क़मर पाए हैं।
न फ़क़त हिन्द तक इस घर की है दुनिया महदूद
उसके अफ़राद का है कर्बोबला में भी वजूद।
था ज़े बस जज़्बा–ए–ख़ालिस से वहां उसका बरूद
उसको सरकारे हुसैनी ने दिया नामो नमूद।
किसी हिन्दी ने जो पाई न वह इज़्ज़त दे दी
भाई के रौज़े की इस घर को इमामत दे दी।

कुदवतुल उलमा के पिता :

मौलाना सय्यद कल्बे आबिद नक़वी जायसी दामाद उम्दतुल उलमा मौलाना सय्यद मोहम्मद हादी मुजतहिद।

आप जायस में पैदा हुए। शिक्षा अपने पिता और स्थानीय उलमा से प्राप्त की। रियासते नानपारा में इमामे जुमा व जमाअत थे। अत्यन्त नमाज़ी व परहेज़गार थे। रियासत में रानी साहिबा और राजा साहब और सब लोग आपका बहुत आदर करते थे। आपके बारे में एक घटना उस ज़माने की प्रसिद्ध है। जब आप लखनऊ में रह रहे थे आपके मकान के बाहरी भाग में एक जामुन का पेड़ था पूरी तरह बढ़ चुका था मगर फल न देता था। एक दिन मित्र बैठे हुए थे। अक़ीमा व ग़ैर अक़ीमा की बात निकली मौलाना ने फ़रमाया कि कूछ दुआ तावीज़ ऐसे हैं कि यदि उनका प्रयोग किया जाये तो अवश्य गर्भ ठहरे और सन्तान पैदा हो। बल्कि स्त्री पर क्या निर्भर यदि कोई वृक्ष फल न देता हो तो वह भी फल देने लगे। किसी न कहा यह जामुन का पेड़ जो सामने मौजूद है काफी समय हो गया इस पर फल नहीं आते। इसी पर प्रयोग किया जाये। यह

सुनकर मौलाना अन्दर गये और तावीज़ लिखकर लाए और उस बेफल के पेड़ पर बन्धवा दिया। हालांकि जामुन की फ़सल नहीं थी मगर कुछ ही दिनों में उस पेड़ पर फूल आये और खुब फला। फिर वह पेड़ जब तक रहा उसी ज़माने में फूलता फलता रहा।

एक बार मौलाना मौसूफ़ और जरवल के रईस हाजी सय्यद ज़हूर हुसैन साहब जरवल से लखनऊ आ रहे थे बारिश का ज़माना था। घाघरा नदी उफान पर थी। मल्लाह नदी पार करने से मना कर रहे थे। कहते थे कि बादल घिरे हुए हैं अगर पानी बरसने लगा तो कठिनाई हो जाएगी। मौलाना ने आग्रह किया और कहा कि नाव पर एक बून्द पानी न पड़ने पाएगा। आख़िर एक कश्ती पर सवार हुए। कश्ती रवाना हुई। मौलाना ने दो तावीज़ लिखकर कश्ती में डाल दिये। संयोग से खूब तेज़ बारिश होने लगी मगर नाव पर और नाव पर सवार लोगों पर एक बूंद पानी न पड़ा यहां तक कि नाव दूसरे किनारे तक पंहुच गई।

जब मौलाना कल्बे आबिद साहब ने ज़ियारत के सफर पर जाने का इरादा किया तो अपने बुजुर्ग पिता मौलाना कल्बे हुसैन साहब को आग्रह करके रियासते नानपारा ले गये और खुद ज़ियारत के लिए रवाना हुए। पवित्र स्थानों की ज़ियारत करने के बाद मशहद मुक़द्दस मं 1283 हिजरी में इंतिक़ाल फ़रमाया और वहीं दफ़न हुए।

आपके देहान्त के बाद आपके पिता अपने आखिर वक्त तक रियासते नानपारा में रहे और इमाम जुमा रहे और लोगों का धार्मिक मार्ग दर्शन करते रहे। रियासत सुन्नियों की थी मगर मौलाना कल्बे हुसैन के व्यवहार, पवित्रता तथा ज्ञान के सुन्नी–शिया सब प्रशंसक थे। वह जिधर से गुज़रते थे लोग अपनी दुकानें या अपने काम छोड़कर आदर के लिए खड़े हो जाते थे। मौलाना के देहान्त के बाद आपके छोटे बेटे मौलाना कल्बे अस्करी साहब ने दीन की सेवा और जुमे की इमामत के फर्ज अन्जाम देना शुरू किये। जब मौलाना कल्बे अस्करी का भी इन्तिकाल हो गया तब मौलाना सय्यद आक़ा हसन साहब की इच्छा पर मुर्क़रमुल उलमा मौलाना सय्यद सज्जाद हसन ज़ैदी मुजतहिद 'तूर' जौनपुरी ने इस मंसब को स्वीकार किया।

कुदवतुल उलमा की परवरिश और शिक्षा :

कुदवतुल उलमा लगभग डेढ़ साल के थे जब आपके पिता का मशहद मुक़द्दस मे देहान्त हो गया और कुछ महीने बाद ही अर्थात जब आप दो वर्ष के हुए तो माता का भी देहान्त हो गया ओर वह इमामबाड़ा गुफरानमआब में दफन हुईं।

जब कुदवतुल उलमा के सर पर वालदैन का साया न रहा तो आपके छोटे मामा एमादुल उलमा मौलाना सय्यद मुस्तफ़ा ने जो मीर आग़ा साहब इल्लियीन मआब के नाम से प्रसिद्ध थे अपनी सन्तान की तरह आपकी परवरिश की। पांचवे साल जनाब मुम्ताजुल उलमा मौलाना सय्यद मोहम्मद तक़ी साहब क़िब्ला ने रस्मे तस्मिया खानी (बिस्मिल्लाह) अदा फ़रमाई। उसके बाद प्रारम्भिक शिक्षा मौलाना मिर्ज़ा काज़िम हुसैन साहब शिष्य एमादुल उलमा से प्राप्त की। फिर मदरसा ईमानिया स्थित इमामबाड़ा ज़ुब्दतुल उलमा मौलाना अली नक़ी साहब (पुत्र सय्यदुल उलनमा मौलाना सय्यद हुसैन इल्लियीन) से सर्फो नहो (शब्दों के प्रयोग का ज्ञान) और दीनियात की कुछ किताबें मौलाना मिर्ज़ा क़ासिम अली साहब काशमीरी से पढ़ीं।

इसके पश्चात सर्फो नहों, दर्शनशास्त्र, तर्क, धर्म के आदेशों का ज्ञान तथा साहित्य की पुस्तकें मौलाना सिब्ते मोहम्मद साहब (पुत्र खुलासतुल उलमा सय्यद मुर्तज़ा इब्ने सुल्तानुल उलमा) से पढ़ीं। फिर माकूलात व मन्कूलात और फिक़्ह व उसूल की उच्च शिक्षा के केन्द्र शम्सुल उलमा सय्यद मोहम्मद हुसैन मुजतहिद जो अल्लन साहब के नाम से मशहूर थे (पुत्र मलेकुल उलमा मौलाना सय्यद बन्दा हुसैन मुजतहिद इब्ने रिज़वानमआब), मलाजुल उलमा मौलाना सय्यद अबुल हसन मुजतहिद उर्फ जनाब बच्छन साहब (पुत्र मुल्कुल उलमा), एमादुल उलमा इल्लीयीनमआब मीर आग़ा साहब और ताजुल उलमा मौलाना अली मोहम्मद साहब मुजतहिद (पुत्र सुल्तानुल उलमा) आलल्लाहो मकामहु से प्राप्त की।

विवाह :

कुदवतुल उलमा का विवाह एमादुलउलमा की पुत्री सय्यदा उम्मतुज़ ज़हरा बेगम से हुई थी जो बहुत धार्मिक एंव चरित्रवान थीं।

पवित्र स्थलों की ज़ियारत तथा शिक्षा :

आप इराक़ चार बार ज़ियारत के लिए गये और हर बार साल भर क़याम किया और कर्बला और नजफ में आक़ा शेख अली यज़दी साहब, आक़ा सय्यद मोहम्मद हाशिम साहब क़ज़्वीनी, आक़ा शेख हादी शिष्य आक़ा मोहम्मद हसन शीराज़ी, आक़ा मोहम्मद हुसैन माज़िन्दरानी, आक़ा शेख ज़ैनुल आब्दीन माज़िन्दरानी, आक़ा मिर्ज़ा मोहम्मद हुसैन शहरिस्तानी, आक़ा शेख मोहम्मद हसन मामक़ानी, आक़ा सय्यद काज़िम तबातबाई और अपने चचा आक़ा सय्यद कल्बे बाक़िर नक़वी जायसी की ख़ारजी ज्ञानवर्धक सभाओं में शरीक होते रहे।

आक़ा शेख़ मोहम्मद हुसैन माज़िन्दरानी से 1307 हि0 में और आक़ा शेख़ ज़ैनुल आब्दीन माज़िन्दरानी, आक़ा शेख मोहम्मद हसन मुग़ानी और आक़ा मिर्ज़ा मोहम्मद हुसैन शहरस्तानी से 1311 हि0 में इजतेहाद के इजाज़े

हािसिल किए। 1313 हि0 में इमादुल उलमा मीर आग़ा साहब ने भी इजतेहाद का इजाज़ा प्रदान किया।

साहबे 'तज़किरा–ए–बेबहा' कहते हैं कि बहरूल उलूम के देहान्त के अवसर पर मैंने अल्लामा किन्तूरी से पूछा कि लखनऊ के उलेमा में अब सब से बड़ा फक़ीह कौन है तो आप ने कुदवतुल उलमा का ही नाम लिया था।

इमामते जुमा मस्जिदे आसफी :

11 रमज़ान 1323 हिजरी गुरूवार के दिन एमादुल उलमा सय्यद मुस्तफ़ा साहब का इन्तिक़ाल हुआ तो उनकी नमाज़े जनाज़ा आप ही ने पढ़ाई। देहान्त के तीसरे रोज़ तीजे की मजलिस हुई जिसमें बहुत बड़ी संख्या में लोगों ने शिरकत की। मजलिस में शमसुल उलमा मौलाना सय्यद इब्ने हुसैन साहब मुजतहिद ने एमादुल उलेमा के पश्चात कुदवतुल उलमा के किरदार की बलन्दी और इल्म और अमल की प्रशंसा की और सय्यदुश शुहदा अलैहिस्ससलाम के मसाएब पढ़े। मजलिस ख़त्म होने के बाद शमसुल उलमा मौलाना सय्यद मोहम्मद हुसैन मुजतहिद उर्फ जनाब अल्लन साहब क़िब्ला और मौलाना सय्यद अली अकबर साहब क़िब्ला पुत्र सुल्तानुल उलमा ने ख़लअते ताज़ियत व जानशीनी यानी काली अबा व अम्मामा अपने हाथों से कुदवतुल उलमा को पहनाया और उनसे मुसाफ़ेहा किया।

और खुद एमादुल उलमा ने अपनी ज़िन्दगी में ही कुदवतुल उलमा की जानशीनी का एलान फरमा दिया था। चुनान्चे एमादुल उलमा के बाद कुदवतुल उलमा छटे इमाम जुमा हुए अर्थात गुफ़रानमआब के बाद रिज़वानमआब, जन्नतमआब, शम्सुल उलमा मौलाना सय्यद मोहम्मद इब्राहीम, एमादुल उलमा और कुदवतुल उलमा (यह सिलसिला आज तक आपकी नस्ल में चल रहा है यानी कुदवतुल उलमा के बाद उनके पुत्र ज़ाकिरे शाम ग़रीबां उम्मतुल उलमा सय्यद कल्बे हुसैन साहब क़िब्ला और उनके बाद सफवतुल उलमा मौलाना कल्बे आबिद साहब क़िब्ला और उनके बाद उनके बेटे व जानशीन क़ायदे मिल्लत मौलाना सय्यद कल्बे जवाद नक़वी साहब किब्ला इमाम जुमा आसिफी मस्जिद हैं।)

मौलाना आक़ा हसन साहब अपने ज्ञान और कर्म से खवास पसन्द होते हुए अवाम के और खास तौर से परेशान हाल लोगों के मददगार और सरपरस्त मुजतहिद थे। वह मेहनती, पराक्रमी, चरित्रवान, निष्ठावान, स्पष्टवादी, उदार स्वभाव के सहानुभूति रखने वाले, क़ौम के समर्थक और सुधारक थे।

कुदवतुल उलमा की सेवाएं :

प्रख्यात मौलाना हाजी सय्यद मुर्तज़ा हुसैन साहब लिखते है : ''मौलाना बड़े क्रियाशील, उन्नत मस्तक तथा सुधारवादी थे। शिष्यों से प्रेम करते थे। वह उच्चकोटि के शिक्षक माने जाते थे। वह अत्यन्त व्यस्त थे उदाहरणार्थ मस्जिद आसिफुद्दौला में नमाज़ जुमा व ईदैन की इमामत नवाब मीर असगर हुसैन साहब नरही के मैनेजर तथा 1909 ई0 से वक़्फ़ फ़खरूद्दीन के मुख्तार थे। पूरे मुल्क से मसायल पूछे जाने तथा सवाल जवाब के बावजूद उन्होने देशव्यापी प्रगति के लिए कौमी अधिकारों तथा कर्तव्यों का आंकलन (सर्वेक्षण) करने के लिए और आधुनिक रूचियों से अवगत होने के लिए 1319 हि0 में अन्जुमन सदरूस सुदूर की स्थापना की जो 1323 हि0 में आल इण्डिया शिया कांफ्रेस के नाम से प्रसिद्ध हुई।''

1. मासिक पत्रिका 'मआलिम' और समाचार पत्रिका 'अननातिक' :

मौलाना सय्यद आग़ा महदी साहब किब्ला तारीख़े लखनऊ भाग द्वितीय के पृष्ट सं0 131 पर लिखते हैं कि पत्रकारिता की दुनियां को मालूम हो कि पहली मासिक पत्रिका उन्होंने (कुदवतुल उलमा) ने निकाली और पहला अख़बार उनके घर से निकला।

हज़रत गुफ़रानमआब की जीवन कथा में भी आपका कथन है कि कुदवतुल उलमा सय्यद आक़ा हसन मुजतहिद..........क़ौम में जागृति की आत्मा फूंकने वाली मासिक पत्रिका मआलिम और साप्ताहिक पात्रिका 'अननातिक' के संस्थापक थे (अन नातिक में हर हफतें दो पृष्टों पर आपकी तफ़सीर प्रकाशित होती थी)।

पहले तो कुदवतुल उलमा ने फ़क़ीहे अहलेबैत एमादुल उलमा सय्यद मुस्तफ़ा साहब के सरंक्षण में मतबा (प्रेस) एमादुल इस्लाम कायम किया जिसका उद्देश्य हज़रत गुफ़रानमआब व आले गुफ़रानमआब की किताबों या उनके अनुवाद प्रकाशित करना तथा साथ ही दूसरे लेखकों की पुस्तकों को प्रकाशित करना था।

इमादुल इस्लाम प्रेस की स्थापना के पश्चात 1318 हि0 में मासिक ज्ञान वर्धक पत्रिका 'मआल्लिम' दफ़तर कारखाना एमादुल इस्लाम से प्रकाशित किया। लेखक स्वंय कुदवतुल उलमा और कारखाने के मालिक मौलाना कल्बे हुसैन साहब किब्ला थे। अखबार 'अन्नातिक' की तरह बरसों प्रकाशित हुई जिसमें एमादुल उलमा के फतवे आम तौर से आरम्भ में छपते थे।

मासिक 'मआल्लिम' और साप्ताहिक 'अन्नातिक' के लक्ष्य और उद्देश्य :

हर प्रकार के उच्च कोटि के लेख, ज्ञानवर्धक एतिहासिक सभ्यता तथा शिष्टाचार से सम्बन्धित विषय एंव धार्मिक और ज्ञान व हदीस से सम्बन्धित समस्याएं तथा ऐसे

लेखजो उपयोगी हों औरा शरआ, मज़हब और कानून के खिलाफ न हों मुल्क के मोमनीन की सेवा में पेश किये जायें ताकि हर प्रकार के ज्ञान और विद्या से उनका परिचय हो। साथ ही लोगों को हिन्दुस्तान के शियों के हालात और ख़बरों बल्कि शिया जगत के समाचार और हालात का ज्ञान भी प्राप्त हो।

2. अन्जुमन सदरूस सुदूर कांफ्रेंस इमामिया इसना अशरिया लखनऊ और उसके लक्ष्य तथा उद्देश्य :

कई माह पुर्व से कुदवतुल उलमा एक समाजी और सुधार सम्बन्धी संस्था की स्थापना के लिए जबान व लेखन के द्वारा प्रयासरत थे। आख़िरकार आप के प्रस्ताव और प्रयास से अन्जुमन इमामिया जिसको अन्जुमन सदरूस सुदूर कांफ्रेंस इमामिया अस्ना अशरिया का नाम दिया गया कौम की सहायता और प्रगति के लिए एमादुल उलमा जनाब सय्यद मुस्तफ़ा साहब के द्वारा आयोजित हुई जिसके ज़रिये दीन व दीनियात के प्रचार प्रसार और कौम में व्यापार का प्रचलन करने के लिए निश्चय किया गया। यह निर्णय किया गया कि अन्जुमन शिया समुदाय को व्यापार की ओर आकृष्ट करेगी। हर जगह व्यापार सम्बन्धी शाखाएं खोलेगी और अन्जुमन खुद भी व्यापार करेगी।

उलमा और विद्यार्थियों की मदद और मदरसों को खोलने और अज़ख़ानों और मस्जिदों की तामीर और मरम्मत, ग़रीबों की सहायता तथा खुत्बों और उलूम (ज्ञान के विषयों) का प्रकाशन एंव आम लोगों की भलाई के काम व शियों की शिक्षा, दस्तकारी तथा युनानी ईलाज की शिक्षा के सम्बन्ध में अपने सामर्थ्य भर कार्य करेगी। इस अन्जुमन को सरकार से शुभचिन्ता एंव सद्भाव के अलावा और किसी राजनैतिक मामले से कोई सरेकार नहीं होगा। हर शहर और गांव में इस अन्जुमन की शाखाएं बनाई जायेंगी और वह अन्जुमन की शाखाएं व्यापार की शाखाएं भी स्थापित करेंगी और उन पर नियन्त्रण रखेंगी।

अन्जुमन सद्रुस सुदूर कांफ्रेंस इमामिया इस्ना अशरिया का पहला अधिवेशन 5 जुलाई 1902 ई0 मुताबिक 17 रबीउल अव्वल 1219 हि0 दिन शुक्रवार के 8 बजे सुबह से 10 बजे सुबह तक एमादुल उलमा सय्यद मुस्तफ़ा मुजतहिद की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। जिसमें प्रस्तावित कार्यक्रमों पर कार्य करने का निर्णय लिया गया।

सबसे पहले अन्जुमन की पूंजी के लिए एक बुक डिपों का ऑफिस एमादुल इस्लाम के दफ़्तर जौहरी मुहल्ला लखनऊ में खोला गया जिसके मालिक मौलाना सय्यद कल्बे हुसैन साहब क़िब्ला थे।

शव्वाल 1321 हि0 में मौलाना सय्यद यूसुफ़ अली साहब पेशनमाज़ व वायज़ अन्जुमन की तरफ़ से मुक़र्रर किये गये ताकि वह अनेक स्थानों अर्थात शहरों, कस्बों तथा गांवों का दौरा करें और दस—दस पन्द्रह—पन्द्रह दिन रहकर अक़ामते जुमा व जमाअत करें और उपदेश तथा प्रवचन दें और दीन और दीनियात की शिक्षा दें।

इसी के साथ कुदवतुल उलमा लोगों को व्यापार की तरफ़ तेजी से प्रेरित करने लगे। ऑल इण्डिया शिया कांफ्रेनस 1957 ई0 कलकत्ता के सिदारत के खुतबे में ज़ाकिरे शामें ग़रीबां उमदतुल उलमा मौलाना सय्यद कल्बे हुसैन साहब क़िब्ला मुजतहिद ने बयान फ़रमाया कि ''मेरे वालिद मरहूम कुदवतुल उलमा ने अक्सर अपने अइज़्ज़ा को ग़ल्ले और कपड़े की दुाकनें खुलवा दीं और खुद भी उन दुकानों पर जा कर बैठे........ और बाज़ दिन मैं खुद और बाज़ दिन दीगर हज़रात ठेला लेकर शहर में निकले और मामूली चीज़ें जैसे सिगरेट, बीड़ी और बिस्कुट वगैरह फ़रोख़्त किये।''

3. आल इण्डिया शिया कान्फ्रेंस :

1323 हि0 मुताबिक 1907 ई0 अन्जुमन सदरूस सुदूर कान्फ्रेंस इमामिया इस्ना अशरिया का नाम आल इण्डिया शिया कानफ्रेंस कर दिया गया जिसके धीरे धीरे बहुत से अनुभाग स्थापित हुए जैसे :

1. सरफ़राज़ प्रबन्धक बोर्ड (जिसके अन्तर्गत सरफ़राज़ अख़बार जारी हुआ। और सरफ़राज़ क़ौमी प्रेस और सरफ़राज कौमी बुक डिपो स्थापित हुए)
2. आल इण्डिया शिया यतीमखाना, लखनऊ।
3. लिसानुल क़ौम 'सफ़ी' अध्ययन कक्ष एंव पुस्तकालय, क़ौमी घर नादान महल रोड, लखनऊ।
4. क़ौमी घर आल इण्डिया शिया कान्फ्रेंस, नादान महल रोड लखनऊ नादान महल रोड लखनऊ।

आल इण्डिया शिया कान्फ्रेंस का अधिवेशन मेरठ में 28 व 29 दिसम्बर 1955 ई0 को हुआ। हुज्जतुल इस्लाम सरकार उमदतुल उलमा मौलाना सय्यद कल्बे हुसैन नक़वी साहब मुजतहिद ने अध्यक्षीय भाषण दिया। ''आज मैं जिस कांफ्रेंस के फराएज़े सिदारत अन्जाम देने के लिए हाज़िर हुआ हूं उस कान्फ्रेंस ने और मैंने एक ही आग़ोश में परवरिश पाई है। मंजिले तरबीयत एक थी, मर्कज़े नशवुनुमा एक था यानी मेरे वालिद मरहूम कुदवतुल उलमा मौलाना आक़ा हसन साहब क़िब्ला ने 1907 ई0 में इस कान्फ्रेंस की बुनियाद रखी और सरकार नजमुल मिल्लत और सरकार नासिरूल मिल्लत तबासराहने इसके इस्तेहकाम में हर कोशिश सर्फ़ फरमाई। मुझको वह वक्त याद है जब उसका नाम अन्जुमन सदरूस सुदूर कांफ्रेंस इमामिया इस्ना अशरी था। आज तो दुनिया शियों के

उलमा को तंग नज़र, कदामत पसन्द, सियासत से बेख़बर सभी कुछ कहने पर तैयाार हैं मगर आप याद रखें कि यह बज़्मे शूरा, यह महदूद जम्हूरियत का मर्क उलमा–ए–मज़हब के ज़ेहने रसा की ईजाद और इखतेरा है। जिस वक्त फिदायाने तर्ज़े जदीद बिल्कुल खामोश और बेख़बर थे उस वक्त अलेमाने दीन ही ने ज़रूरयाते ज़माना को महसूस करते हुए कान्फ्रेंस की तशकील की। उलमा ही ने बढ़ाया और कामयाब बनाया। इस शजर की आबयारी करके काबिले बर्गोबार बनाया और आपके हाथों में दे दिया।

सिपुरदम बे तू माया–ए–ख़्वैशरा
तू दानी हिसाबे कमोबेश रा

पहले ही जलसे में इसका नाम मुख्तसर करके आल इण्डिया शिया कान्फ्रेंस क़रार दे दिया गया जो आज ज़बांजदे खासो आम है।

इस कान्फ्रेंस ने आलमे रंगो बू में आंख खोलते ही दीनी व दुनियावी मैदान में अमली इक़्दामात शुरू कर दिये। वायज़ीन व मुबल्लेग़ीन मुअय्यन किये गये जो तमाम हिन्दुस्तान में दौरा करके क़ौम की दीनी व दुनियावी ख़िदमात अन्जाम दें। दारूत तालीफ़ व दारूत तरजुमा कायम किया गया। शियों की इक्तेसादी इस्लाह के कार्यक्रम बनाये गये। शिया शुगर फैक्टी का इफतेताह किया गया। इब्तेदाई तालीम का मदरसा क़ायम किया गया। दारूल मुतालेआ खोला गया। तलबा के वज़ायफ जारी करने की तहरीक पेश हुई और वज़ायफ दिये गये। यतीमखाना भी इसी दौर की बुनियाद है और शिया कालेज जो आज मचल मचल के आगोशे मादर से बाहर निकलना चाहता है वह भी इसी एक अस्ल की फरआ (शाख़) है। इनमें से बाज़ चीजें खुदा के फ़ज़्ल से अब तक मौजूद हैं और बाज़ ख़त्म हो गई।''

इसी अधिवेशन में हज़रत मानी जायसी ने अपनी प्रख्यात कविता पढ़ी जो बहुत पसन्द की गई। नज़्म के केवल चार बन्द प्रस्तुत किये जाते हैं :

एक हालत पर नहीं रहता है कारोबारे दहर
नित नई तामीर में मसरूफ है मेमारे दहर।
मुन्हनी है इब्तेदा ही से ख़ते रफतारे दहर
हादिसों के दायरे हैं गर्दिशे पुरकारे दहर।
हो तहय्युर अक़्ल को नक़्शा बदल जाता है यूं
अहदे माज़ी हाल के सांचे में ढल जाता है यूं

याद है कब इस इदारे की हुई थी इब्तेदा
किसने डाली और किस मक्सद से डाली थी बिना।
कैसे यह पौधा उगा कैसे हुई नश्वो नुमा
किसने बहरे आबयारी खून पानी कर दिया।
देखो तौक़ीए दवामे सय्यदे आक़ा हसन
ज़ीनते उन्वाँ है नामे सय्यदे आक़ा हसन।

क़ौम के अफ़राद में देखा जब उसने इंतेशार
तुल गया शीराज़ाबन्दी पर बअज़्में उस्तुवार।
आये राहे सई में कितने ही दश्तो कोहसार
रौंदता बढ़ता गया लेकिन ब तमकीनो विकार।
जब पये इस्लाह हाजत थी इमामे अस्र की
आके नायब ने नियाबत की इमामे अस्र की।

है वह पाइन्दा असर आक़ा हसन के नाम में
आज तक बाक़ी है जो इस गर्दिशे अय्याम में।
लखनऊ की सरज़मीं लाई गई थी काम में
था रिफ़ाहे क़ौम का नक्शा रिफ़ाहे आम में।
याद है इस बज़्म की बुनियाद की बात आज तक
मेरी नज़रों में है सन उन्नीस सौ सात आज तक

आल इण्डिया शिया कान्फ्रेंस का पहला इजलास 1907 में अन्जुमन रिफ़ाहे आम लखनऊ की इमारत में आयोजित हुआ था। वह ऐतिहासिक सभा कुदवतुल उलमा ने ही बुलाई थी और स्वागत समारोह की अध्यक्षता स्वंय सभा के संस्थापक ने की थी।

लम्बे अन्तराल के बाद इससे मिलता जुलता दृश्य तब लोगों ने देखा जब आल इण्डिया शिया कान्फ्रेंस की चालीसवीं शानदार प्रतिनिधि सभा इमामबाड़ा गुफ़रानमआब (जहां कान्फ्रेंस के संस्थापक कुदवतुल उलमा दफ्न हैं) में 11 व 12 अप्रैल 1964 को आयोजित हुई। सभा की अध्यक्षता के लिए जनाब सेठ हुसैन भाई लाल जी को और स्वागत समारोह की अध्यक्षता के लिए मौलाना कल्बे आबिद साहब क़िब्ला रहमतमआब को निर्वाचित किया गया।

इस जलसे में नवाब तजम्मुल हुसैन खां साहब पूर्व अध्यक्ष आल इण्डिया शिया कान्फ्रेंस का बयान था। (जो सरफराज़ कान्फ्रेंस नम्बर जून 1964 में देखा जा सकता है) कि लखनऊ हमेशा शीईयत का मर्कज़ समझा गया है। इसलिए आज फिर इस कान्फ्रेंस का यहां आयोजित होना अपने मर्कज़ की तरफ़ पलटना कहा जा सकता है और इस इमामबाड़े में और भी मुनासिब है इसलिए कि इसी खानदान की उस मुमताज़ हस्ती के हाथ इस कान्फ्रेंस की बुनियाद पड़ी जिन्हें हम सब कुदवतुल उलमा के नाम से आज भी याद करते हैं।

4. शिया कालेज लखनऊ :

मौलाना सय्यद मोहम्मद हुसैन साहब नौगावीं तज़किर–ए–बेबहा फ़ी तारीखुल उलमा पृष्ठ 60 पर लिखते हैं कि 1319 हि0 में आप (कुदवतुल उलमा) ने अन्जुमन सदरूस सुदूर क़ायम की जो 1323 हि0 में आल इण्डिया शिया कान्फ्रेंस के नाम से मशहूर हो गई और इसी कान्फ्रेंस

की आठवीं सभा में शिया कालेज का बेड़ा उठाया गया था और उसी के चन्दे के लिए आप और लाहौर के रईस नवाब सर फतेह अली खां क़ज़ल बाश व मौलाना सै0 अली ग़ज़न्फ़र इज्तेहादी साहब व जनरल सिक्रेटरी कान्फ्रेंस जानसठ तशरीफ़ लाए।

साहबे मतलए अनवार शिया कालेज के प्रस्ताव का आपको ज़िम्मादार मानते हैं अर्थात उसके प्रेरक तथा प्रस्तावक कुदवतुल उलमा को व इस महान संस्था के संस्थापक तीन व्यक्ति यानी ख़तीबे आज़म शम्सुल उलमा मौलाना सय्यद सिब्ते हसन नक़वी 'फ़ातिर' जायसी, अलहाज नवाब सर फतेह अली खां कर्बलाई ताल्लुकंदार नवाबगंज अलीयाबाद, बहराइच और रईसे लाहौर तथा नवाब हामिद अली खां साहब रामपुर को मानते हैं और हक़ीक़त भी यही है मगर प्रेरणा और प्रस्ताव के अतिरिक्त इस कालेज को हर एतबार से कुदवतुल उलमा की सरपरस्ती हासिल थी।

उमदतुल उलमा मौलाना सय्यद कल्बे हुसैन साहब ने आल इण्डिया शिया कान्फ्रेंस के चालीसवें इजलास में मेरठ में अपने खुत्बें में फ़रमाया था – ''अगरचे यह कालेज शिया कान्फ्रेंस से दामन कश हैं और अपने को कान्फ्रेंस के मातहत नहीं समझता यहां तक कि कंन्फ्रेंस के जलसे में अपनी सालाना रिपोर्ट भी नहीं पेश करता लेकिन मां बाप को जो मुहब्बत औलाद से होती है वह मुहब्बत औलाद को मां बाप से नहीं होती। इसलिए कालेज शिया कान्फ्रेंस से कितना ही बेफिक्र क्यों न रहे लेकिन कान्फ्रेंस तो उसकी ख़ैरअन्देश ही रहेगी। इसलिए ज़रूरी है कि जहां हम इस जलसे में और चीज़ों पर ग़ौर करें वहां शिया कालेज से भी बे फ़िक्र न रहें।''

5.आल इण्डिया शिया यतीमखाना, लखनऊ :

बहुत पहले से कुदवतुल उलमा शिया यतीम खाने के सिलसिले में प्रयत्नशील थे। अन्ततः उनकी इच्छा पूरी हुई और 1912 ई0 में शिया अनाथालय स्थापित हुआ।

कान्फ्रेंस नम्बर सरफ़राज लखनऊ मई 1947 ई0 के पृष्ट 26 पर आल इण्डिया शिया यतीमखाना लखनऊकी रिर्पोट में सय्यद गुलाम हुसैन नक़वी एडवोकेट लिखते हैं कि ''उभरते हुए सूरज की किरणों की आग़ोश में इस अज़ीमुश्शान इदारे की बुनियाद दो बच्चों के साथ गली शाह छड़ा के एक टूटे हुए मकान में पड़ी। आली जनाब मौलाना मौलवी सय्यद आक़ा हसन साहब किब्ला मरहूम मुजतहिद के दस्ते हक़परस्त ने इस इदारे की बुनियाद डाली थी। मौलाना आग़ा महदी साहब सवानेह हज़रत गुफरानमआब में लिखते हैं कि कुदवतुल उलमा सय्यद आक़ा हसन मुजतहिद शिया कान्फ्रेंस व शिया यतीमखाने के बानी थे।''

डॉ0 सुलतान महमूद 'बर्क़' बनारसी अपनी कविता में यूं श्रद्धांजलि अर्पित करते हैंः–

कुदवतुल मिल्लत जनाबे मौलवी आक़ा हसन
हादिये दीने मोहम्मद आशिक़े रब्बे ज़मन।
नायबे हुज्जत का साया आह सर से उठ गया
कम है गर महशर तलक इस गम में हम हों सीनाज़न।
खुल्क़ भूलें कौन सा और याद किस किस को करें
नक्श है दिल पर हमारे आपका खुलके हसन।
शफ़क़तें उनकी किये देती हैं टुकड़े क़ल्ब के
किस क़दर लबरेज़ था उल्फ़त से हज़रत का सुख़न।
ए फलक आखिर किया यह तेरे जुल्मों जोर ने
हो गया दारूलयतामा आज से बैतुल हुज़न।
रोते हैं किस दर्द से सर पीट कर अपना यतीम
ज़ेरे दामन पल रहे थे चैन से यह खस्तातन।
कौन लेगा अब ख़बर इन बेकसों की ए खुदा
कौन पहनाएगा इनको ईद के दिन पैरहन।
भूखे खुद रहते थे और खाना खिलाते थे इन्हें
साथ बच्चों के किया करते थे उल्फ़त से सुख़न।

6. फ़साद पर क़ाबू :

1326 हि0 में शिया सुन्नी फ़साद के मौक़े पर आपने अपनी बुद्धिमत्ता और दबदबे से स्थिति को संभाला।

7 .मदरस–ए–जाफरिया :

इस मदरसे में दीनी व दुनियावी शिक्षा का प्रबन्ध था अर्थात अंग्रेजी, दीनियात, अरबी और फ़ारसी के साथ आद्योगिक तथा दस्तकारी आदि की भी शिक्षा दी जाती थी। इसके संस्थापक भी कुदवतुल उलमा थे।

8. अन्जुमन यादगारे उलमा :

इस अन्जुमन का उदघाटन 17 रबीउल अव्वल 1328 हि0 में इमामबाड़ा ग़ुफरानमआब लखनऊ मे हुआ जिसके संस्थापक कुदवतुल उलमा थे। इस अन्जुमन का उद्देश्य उलमा की किताबें प्रकाशित करना था! अतः पुस्तकें प्रकाशित हुईं परन्तु इस अन्जुमन का महत्वपूर्ण कार्य एमादुल इस्लाम (लिखित गुफरानमआब) की तीन जिल्दों का प्रकाशन है।

9. शिया बैतुलमाल लखनऊ :

शिया बैतुल माल शियों की आर्थिक उन्नति और सुधार के लिए कुदवतुल उलमा ने स्थापित किया। इस कार्य में उनके सहयोगी और सहायक मौलाना सय्यद अमजद हुसैन साहब इलाहाबादी, शम्सुल उलमा मौलाना सिब्ते हसन साहब, नासिरूल मिल्लत मौलाना सय्यद नासिर हुसैन साहब तथा नजमुल उलमा मौलाना सय्यद नजमुल हसन साहब जैसे उलमा थे।

शिया बैतुलमाल के उद्देश्य व ध्येय निम्नलिखत थे

1.अमरीकन मिशन की भांति समस्त शहरों, कस्बों और गांवों में दीनी मदरसे स्थापित किये जाएं और प्रवचन देने वाले और अध्यापक नियुक्त किये जाएं।

2.अनाथालयों और विधवा गृहों की यथासम्भव स्थापना की जाए।

3.धार्मिक तथा ज्ञान से सम्बन्धित मासिक पत्रिका का प्रकाशन।

शिया बैतुलमाल की स्थापना को कुछ ही समय बीता था कि एक दीनी मदरसा निवाजगंज लखनऊ में क़ायम हुआ जिसमें मौलाना सय्यद मोहम्मद साहब की नियुक्ति अध्यापक के रूप में हुई। इसके साथ ही कुछ गरीब विद्यार्थियों तथा विधवाओं की परवरिश शुरू हो गई और एक पेशनमाज़ जुमा की नमाज़ की इमामत करने तथा धार्मिक मसलों में मार्ग दर्शन के लिए बाहर के स्थानों की यात्रा करने लगे।

10. मासिक पत्रिका 'इब्लाग' :

इस मासिक पत्रिका को कुदवतुल उलमा मौलाना आक़ा हसन साहब क़िब्ला ने जमादिउस्सानी 1347 हि0 मुताबिक नवम्बर 1928 ई0 में जारी किया।

मासिक मत्रिका इब्लाग धर्म और दीनियात के प्रचार–प्रसार तथा एतिहासिक और विभिन्न ज्ञान के विषयों पर लेख तथा शियों की समस्याओं और स्थिति की समालोचना तथा समाचार पर आधारित थी तथा इसके सम्पादक मौलाना सय्यद सिब्ते मोहम्मद हादी उर्फ़ कल्लन साहब क़िब्ला पुत्र एमादुल उलमा मौलाना सय्यद मुस्तफ़ा साहब क़िब्ला मुजतहिद थे। पत्रिका उम्दतुल उलमा मौलाना सय्यद कल्बे हुसैन साहब नाज़िर : बैतुल माल इब्ने कुदवतुल उलमा मौलाना सैय्यद आक़ा हसन साहब क़िब्ला (मुतवल्ली बैतुलमाल) की निगरानी में एमादुल इस्लाम प्रेस में छपकर दफ्तर शिया बैतुलमाल जौहरी मुहल्ला चौक से प्रकाशित हुई। कुदवतुल उलमा के देहान्त के पश्चात इसी शिया बैतुलमाल से सम्बन्धित एक अनुभाग शिया तन्ज़ीम व 'हिफ़ाज़ते नौ–ए–मुस्लेमीन' उमदतुल उलमा सय्यद कल्बे हुसैन साहब क़िब्ला ने कुदवतुल उलमा की स्मृति में स्थापित किया ताकि ग़ैर मुस्लेमीन को दावते इस्लाम दी जाये और जब वे इस्लाम स्वीकार कर लें तो उनकी हर सम्भव सहायता की जाए।

हज व ज़ियारत :

कुदवतुल उलमा तीन बार ज़ियारत के लिए यात्रा कर चके थे, चौथी यात्रा आपने 1345 हि0 में की और ज़ियाराते मशहदे मुक़द्दस व कर्बलाए मुअल्ला, व नजफ़ अशरफ़ और सामरा व काज़मैन और हज और ज़ियारते मदीन–ए–मुनव्वरा करके 1346 हि0 में लखनऊ वापस आए।

सन्तानें :

1.ज़ाकिरे शामें ग़रीबां उमदतुल उलमा मौलाना सय्यद कल्बे हुसैन नक़वी साहब मुजतहिद ताबसरा।

2.नूर बीबी साहिबा मरहूम। (लावलद)

लेखन :

1. रिसाला हरमानुज़्ज़ौजत अनिलएक़ार (फिक़्ह इस्तिदलाली अरबी में)
2. रिसाला गुस्ल वाजिबुन लिनफसही है या वाजिबन लेग़ैरिही है।
3. तरजुमा एमादुल इस्लाम (नामुकम्मल)
4. तफ़सीर कुरआन मजीद (नामुकम्मल)
5. हवाशी व इज़ाफ़ा बर तुहफ़तुल अवाम
6 .फ़तावाए कुदवतुल उलमा।

शायरी :

कुदवतुल उलमा अपनी अनेक व्यस्ताओं की भीड़ में कभी कभी शायरी भी कर लिया करते थे। नमूने के तौर पर कुछ उर्दू तथा फारसी के शेर प्रस्तुत हैं।

मनक़बते हज़रत अमीरूलमोमनीन अली इब्ने अबीतालिब अलैहिस्सलाम :–

नहीं साईल फिरा है कोई खाली बाबे हैदर से
शवाहिद इसके मिलते हैं कलामे खासे दावर से।
है शाहिद हल अता की आयतें ईसारे बेहद पर
सखावत ऊँटों की अदना है पूछो जाके क़म्बर से।
दरे हैदर की दरबानी शहन्शाही से बेहतर है
भला जमशेद और दारा को क्या निस्बत है क़म्बर से।
शुजाअत और फ़नूने जंग में बेमिस्लों बेमानिन्द
किया हारिस को और मरहब को दो टुकड़े बराबर से।
अगर इंसाफों कुव्वत देखना हो आओ ख़ैबर में
दरे ख़ैबर को बांटा आपने कैसा बराबर से।

सलाम बदरगाहे अली रज़ा (अ0):–

ऐ के अज़ तू रौनक़े बाज़ारे दीने मुसतफ़ा
अस्सलाम ऐ नायबे फ़रज़न्दे खत्मुलमुरसलीं।
ऐ शहे दुनिया व दीं बर 'अकमले' आसी निगर
हाजते ऊ कुन रवा ऐ बादशाहे मोमनीं।

देहान्त :

जनाब कुदवतुल उलमा का गुरूवार 12 सितम्बर 1929 ई0 मुताबिक 7 रबीउस्सानी 1348 हि0 को देहान्त हुआ और इमामबाड़ा गुफ़रानमआब में दफ़्न हुए।

क़तआते तारीख़ :

जनाब सय्यद मोमिन हुसैन साहब वकील 'फरयाद' **मरहूम**

जनाबे हुज्जतुल इस्लाम सय्यद आक़ा हसन
ब एहतेरामो ब एजाज़ क़दवतुल उलमा
सने वफ़ात सरे क़ब्र ज़द रक़म फ़रियाद

दरीं मज़ार बसद नाज़ क़दवतुल उलमा
1348 हि0

जनाब यूनुस साहब 'यूनुस' ज़ैदपुरी
पैरवे आले मोहम्मद ख़िज़्रे राहे मारेफत
हाकिमे शरए नबी महकूमें रब्ब इंसो जां
खामए 'यूनुस' रक़मज़द अज़ पै तारीख़े फ़ौत
''रहबरे दीं मौलवी आक़ा हसन जन्नत मकाँ''
1348 हि0

जनाब 'मोहज़्ज़ब' लखनवी साहब मरहूम
अज़ मुरदने आक़ा हसन पैदा शुदा रंजो मेहन
महवे फ़ुगां गश्ती दिले हर मरदो ज़न बासद अलम।
वक़्ते रक़्म आवाज़े ग़ैब आमद 'मोहज़्ज़ब' अज़ फलक
मौलाए बैतुलमाल करदा ज़ीनते क़स्रे इरम।
1929 हि0

मौलवी सय्यद फरहत अली नक़वी साहब 'फरहत' जायसी मरहूम
ज़इस्रारे अहबाब साले वफ़ात
रक़्म कर्द 'फ़रहत' चुनीं दफ़अतन।
बगुफ़्त हातिफ़े ग़ैब अज़रूए जाँ
रक़्मकुन 'क़ज़ा कर्द आक़ा हसन'।
1348 हि0

नविश्ता कलिक 'फरहत' फिल्बदीह फिकरए मौज़ूं
''गुरूबे माहे औजो हिल्म'' साले इन्तेक़ाल आमद।
1 3 4 8 हि0

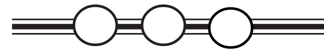
जनाबे मिर्ज़ा मोहम्मद हादी 'अज़ीज़' लखनवी मरहूम
अज़ीज़ मिस्र–ए–फ़ौतश शुनीद अज़ रिज़्वां
''बखुल्दे मंबए अनवार क़ुदवतुल उलमा''।
1 3 4 8 हि0

हज़रत मानी जायसी मरहूम
बूदम बईं ग़म मुब्तेला कज़ बहरे तारीख आमदा
अज़ पेश रिज़्वानम निदा ''मंज़िल गहश खुल्देबरीं''।
1 3 4 8 हि0

मौलाना मोहम्मद हुसैन साहब नौगांवी मरहूम
वा दरेग़ा व दरेग़ा व दरेग़
दो जहां में हो गया महशर बपा।
हज़रते महदी के नायब उठ गए
अफ़ज़ले आलम फ़क़ीहे बे रिया।
ज़ुहद में ईसारो इल्मो फ़ज़्ल में
रखते थे अम्साल में पाया बड़ा।
फ़िक्र जब तारीख़ की मुझ को हुई
सर गरीबां में ज़रा डाला ही था।
यह हुआ तारीख़ का मिसरअ बहम
''मौलवी आक़ा हसन ने की क़ज़ा''।

1348हि0

अन्जुमने हुसैनी जायस की ओर से
हज़रते आक़ा हसन साहब फ़क़ीहे मोतमन
जिनके उठ जाने से वीरां है फ़क़ाहत का चमन।
था अजब औसाफ़े ज़ाती का वह मालिक राहबर
घर में एक खामोश आबिद बज़्म में शम–ए–सुख़न।
इस क़दर जो वज़ा का पाबन्द था क्या हो गया
बज़्म में आता नहीं बेचैन हैं अहले वतन।
पेशवाए अहले आलम अब कहीं मिलता नहीं
मुब्तेलाए ग़म है जायस की हुसैनी अन्जुमन।



मदहे इमामे सादिक़ अ0 स0

नदल हिन्दी

फ़िर हो रही है सादिक़े आले नबी की बात
आलम में आम हो गयी है रौशनी की बात

आले नबी की बात में है ज़िन्दगी की बात
और उन को भूल जाओ तो है मौत ही की बात

ये है ख़ुदी की बात कि मदहे इमाम कर
ग़ैरों का तज़केरा है फ़क़त बेख़ुदी की बात

मैं हूँ असीरे उलफ़ते औलादे मुस्तफ़ा
आज़ादी जिस को कहते हो वह है कभी की बात

मौलाए काएनात[अ0] है वो इतना है सबब
छाई है कुल ज़माने पे मौला अली[अ0] की बात

बाक़िर के घर से लिपटीं हैं रौशन ज़मीरियाँ
जिसको भी देखो करता है तक़दीर ही की बात

जाफ़र ने लो उलूम के दरिया बहा दिये
सच में इसी को कहते हैं दरिया दिली की बात

बिमारे इश्क़े आले नबी बन के मर ''नदा''
इसमे छिपी हुई है तेरी ज़िन्दगी की बात

मुख्य समाचार

चेहलुम हुआ तमाम की सदाओं के साथ निकला चेहलुम का जुलूस कर्बला तालकटोरा लखनऊ में देर रात तक चला मजलिस, मातम और ज़ियारत का सिलसिला

शहीदे करबला हज़रत इमामे हुसैन[अ० स०] और उन के असहाब के चेहलुम की याद में 14 दिसम्बर 2014 ई० को विक्टोरिया स्ट्रीट पर इमामबाड़ा नाज़िम साहब से तारीख़ी चेहलुम का जुलूस अक़ीदतमन्दों के गिरये के साथ बरामद हुआ जुलूस करबला तालकटोरा लखनऊ में जाकर खत्म हुआ। जुलूस में शामिल शबीहे ताबूत, अमारी और अलमें मुबारक समेत तबर्रूकात की ज़ियारत कर अक़ीदतमन्दों ने ख़िराज पेश किया।

जुलूस से पहले क़ायदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब ने इमामबाड़ा नाज़िम साहब में मजलिस को खिताब करते हुए क़ैद ख़ान-ए-शाम से क़ाफ़ेल-ए-हुसैनी की रिहाई का मंज़र बयान करते हुए कर्बला पहुचने का वाकिआ बयान किया क़ायदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब ने कहा कि जब रिहाई का हुक्म हुआ तो सबसे पहले जनाबे ज़ैनब[स० अ०] ने कर्बला जाने की ख्वाहिश ज़ाहिर की और कर्बला पहुँच कर जनाबे ज़ैनब[अ०] ने मातम बरपा किया। अनजुमन नासिरूल इस्लाम, अनजुमन गुलामाने हुसैन, अनजुमन नय्यरूल इस्लाम, अनजुमन गुलज़ारे पंजतन समेत शहर की तमाम अनजुमनों ने जुलूस में शिरकत की।

मजलिस के बाद अनजुमने अब्बासिया इमामिया की ''पहुँचा जो कैद खाने में हुक्मे अमीरे शाम, चेहलुम हुआ तमाम, चेहलुम हुआ तमाम'' की सदा से जुलूस बरआमद हुआ जुलूस में शहरे अज़ा लखनऊ की तमाम अनजुमनें अपने अपने अलम के साथ शामिल हुईं। मातमी अनजुमनें नौहा ख्वानी व सीना ज़नी करती हुई कर्बला तालकटोरा तक गईं वहाँ पर अलविदायी नौहे के साथ नौहा ख़्वानी व सीना ज़नी का इख़्तेताम हुआ। जुलूस में अनजुमन शमशीरे हैदरी ने जब इमामे हुसैन[अ० स०] की बेटी जनाबे सकीना[अ०] की याद में नौहा ''मेरी सकीना को नींद आ गयी है।'' पढ़ा तो अक़ीदतमन्दों की आँखें अश्क बार होगयीं। जुलूस में सभी लोग सीना ज़नी करते हुए चल रहे थे।

जुलूस करबला-ए तालकाटोरा में जा कर ख़त्म हुआ, करबला तालकटोरा में देर रात तक नौहा ख़्वानी व सीना ज़नी का सिलसिला जारी रहा। अक़ीदतमंदों ने ज़ियारत कर दोआएं मार्गी, जुलूस के रास्ते में अज़ादारों के लिये चाय, काफ़ी, पानी वग़ैरह की सबील का इन्तेज़ाम था, जुलूस की हिफ़ाज़त के लिये सख़्त हिफाज़ती बन्दोबस्त किये गये थे हस्सास एलाकों में बड़ी ताअदाद में पुलिस फोर्स की तैनाती के साथ जुलूस पर डरोन के ज़रिये नज़र रखी जा रही थी डी० एम०, डी० आई० जी० और एस० एस० पी० समेत आला अफ़सरान खुद मौजूद रह कर हर सर गर्मी पर नज़र रख़ रहे थे और बड़ी ताअदाद में पुलिस फोर्स मौजूद रही।

सहयूनी फ़ौज का क्रेक डाउन, नवम्बर में 536 फ़िलिस्तीनी ग़िरफ्तार

फ़िलिस्तीन में इन्सानी हुक़ूक़ के सर गरम इदारों की जानिब से जारी आदाद व शुमार में बताया गया है कि नवम्बर में सहयूनी फौज की जानिब से बैतुल मोकद्दस और मकबूज़ा मगरीबी केनारे में निहत्ते फिलिस्तीनियों के खिलाफ़ क्रेक डाउन उरूज पर रहा , इस दौरान 233 कम उम्र लड़कों समेत 533 अफ़राद को हिरासत में लेकर जेलो में डाला गया, इनसानी हुक़ूक़ की तनज़ीम क्लब बराये असीरान की जानिब से जारी एक ताज़ा रिर्पोट में बताया गया है कि नवम्बर में गिरफ़्तार किये गये बाज़ अफ़राद को कड़ी शरतों के साथ रेहा किया गया है, कुछ को रेहाई के बाद घरों में नज़र बन्द किया गया, कुछ को इलाक़े के बाहर कर दिया गया और बाज़ से जुर्मानों की आड़ में भारी रक़म वसूल की गयीं।

रिपोर्ट के मुताबिक मग़रिबी केनारे का आल-खलिल शहर ग़िरफ़तारियों के हवाले से पहले नम्बर पर रहा , जहां से दो ख़्वातीन आमाल अससअदह और हालेह अबुल सल समेत 120 अफ़राद को हेरासत में लिया गया, इस के अलावाह राम अल्लाह से 53, बैतुल-लहम से 34, नाबलिस से 30, जनीन से 26, तउलकरम से 19, तुबास से 12 अरीहा से 6, कलकिलिया से आठ और सलफियत से पांच शहरीयों को हेरासत में लिया गया, रिपोर्ट में बताया गया है कि सहयूनी फौजीयों की जानिब से एक ताज़ा कारवाई में 13 फिलिस्तिनियों को गुज़िश्ता शब हेरासत में लिया गया , इन में छे का तअल्लुक अल-खलिल शहर से बताया जाता है, महरूसीन में 16 साल के अमादुदीन असा फरह समेत कई दूसरे कम उम्र लड़के भी शामिल हैं,

इसराईली फौज की आंसू गैस शिलिगं, अल-कुदस में एक हज़ार तलबा तालीम से महरूम

इसराईल के एक इबरानी साप्ताहिक समाचार पत्र यरो शालीम ने अपनी एक ताज़ा रिपोर्ट में इनकेशाफ़ किया है कि बैतुल मोकद्दस के पनाह ग़ज़ीन केम्प में इसराईली फौज की जानिब से रोज़ाना की आंसू गैस की शिलिंग से केम्प के कम से कम 950 बच्चे और बच्चियां नये तालिमी साल से पढ़ाई से महरूम हैं,

इसराईली जरीदे के मुताबिक बैतुल मोकद्दस में फिलिस्तिनीयों पर तशद्दुद के ऐहतेजाज के जवाब में इसराईली फौज आंसू गैस की अन्धा धुन शिलिंग करती है, बैतुल मोकद्दस में शोअफात कालूनी और शोअफात पनाह ग़ज़ीन केम्प इस शिलिंग से सब से ज़्यादा प्रभावित हुये हैं, हत्ता कि इसराईली फौज की तरफ से आँसू गैस से स्कूलों की चार दीवारी में मौजूद तलबा और तालेबात भी मोतासिर होते हैं, अख़बार ने शोअफ़ात के एक स्कूल में ज़ेरे तालिम दो बच्चो की वालिदा का बयान नक़ल किया है जिन का कहना है कि वह रोज़ाना बच्चो को स्कूल पढ़ने के लिये भेजती हैं, लेकिन वह कुछ ही देर बाद इस हाल में वापस आ जाते हैं, कि आंसू ग़ीस की शिलिंग से बुरा हाल हुआ होता है, जिस तरह घर में तालिम का कोई इन्तेज़ाम नहीं, अब इसी तरह स्कूल में भी बच्चो का वक़्त बरबाद हो रहा है।

यहूदियों की मक़्बूज़ा फ़िलिस्तीन की मस्जिदों में अज़ान पर पाबन्दी की माँग

यहूदी आबाद कारों ने शिमाली फ़िलिस्तीन के सन् 1948 ई० के दौरान इसराईली तसल्लुत में आने वाले शहर याफ़ा की तमाम मसाजिदों में अज़ान पर पाबन्दी का मोतालेबा किया है जिस के बाद मुकामी फिलिस्तीनी आबादी में सख़्त ग़म व गुस्से की लहर दौड़ गयी है, याफ़ा के एक मुकामी ज़रिये ने बताया कि यहूदी आबाद कार माज़ी में शहर की मसाजिदों में अज़ान पर पाबन्दी के लिये ताकत के इस्तेमाल समेत तरह तरह के हथकन्डे इस्तेमाल करते रहते हैं, जिन में नाकामी के बाद अब इन्होंने इसराईल अदालत से मोतालेबा किया है कि आदालत याफ़ा की तमाम मसाजिद में अज़ान पर पाबन्दी लगाने का फैसला सादिर करे, एक मोकामी फ़िलिस्तीनी रहनुमा शेख़ मोहम्मद अबून्नज्म ने बताया कि याफ़ा शहर में बाहर से लाकर आबाद किये गये यहूदी मुसलसल ये मोतालेबा कर रहे हैं कि शहर की मसाजिदों में अज़ान देने पर पाबन्दी लगाई जाये क्योंकि अज़ान इन के आराम व सुकून में ख़लल पैदा कर रही है,

शेख़ अबून्नज्म ने बताया कि यहूदी आबाद कारों की जानिब से याफ़ा की मसाजिद में अज़ान और नमाज़ पर पाबन्दी के लिये साज़िशें जारी हैं, हाल ही में यहूदियों के एक ग्रूप ने इसराईल की एक मकामी अदालत में अपील की है जिस में कहा गया है कि चूंकि मसाजिद से बुलन्द होने वाली अज़ान सुकून में ख़लल पैदा करती है इस लिये अदालत अज़ान देने पर पाबन्दी लगाये, शेख़ अबुन्नज्म ने बताया कि यहूदी आबाद कारो को सब से ज़्यादा तक़लीफ़ हीफ़ाओ शहर के दाख़ेली रास्ते पर वाक़े समन्द्र की किनारे एक मसजिदे जामे की अज़ान से है, हालाकिं ये मसजिद काफ़ी क़दीम है और मुसलसल अज़ान दी जाती रही है।

हर मज़हब के अफ़राद एक जुट हो कर दहशत गर्दी का मुकाबेला करें: क़ायदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद नक़वी साहब

17 दिसम्बर को दहशत गर्द तनज़ीम तालेबान के ज़रिये पेशावर में एक मिलेट्री स्कूल पर हुये दहशत गर्दाना हमले की मज़म्मत करते हुये मजलिसे उलमा-ए-हिन्द के जनरल सिक्रेट्री मौलाना क़ल्बे जवाद नक़वी ने कहा कि पाकिस्तान में शिआ व सुन्नी दोनों दहशत गर्दी के शिकार होते है, अज़ाख़ानों पर मजलिस के दौरान हमले होते हैं, मुसलमानों खोसुसन शिओं की टारगेट किलिन्क हो रही है, बे गुनाहों का क़त्ल आम किया जा रहा है, पाकिस्तान समेत इराक़, सीरीया और कई मुलकों में ऐसे दहशत गर्दाना हमलों में कभी अस्पतालों को निशाना बनाया गया और कभी स्कूलों को मगर मौलवियों के साथ दुसरे लोग भी खामोश रहे क्योंकि वह हमले ज़्यादा तर शिओं पर किये जा रहे थे इन की खामोशी दहशत गर्दों की हिम्मत में इज़ाफ़े का सबब बनती रही है, उन्होंने कहा कि आज पाकिस्तान में दहशत गर्दाना हमले में जिस तरह मासूम बच्चों को निशाना बनाया गया वह इनतेहाई शरमनाक हरकत है जिसकी हम मज़म्मत करते हैं, इस तरह के हमलों से हमारे मुल्क़ की हुकूमतों को भी कुछ सीखना चाहिए यहाँ भी इसी ज़हनियत के लोग मजलिसों पर हमले कर रहे हैं, मगर हमारी हुकूमतें वोटों की लालच में चुप रहती हैं, इस तरह ऐसे लोगों के हौसले बढ़ते हैं,